Hindi Khabar – September 2018
हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका)
HINDI SHIKSHA SANGH – South Africa

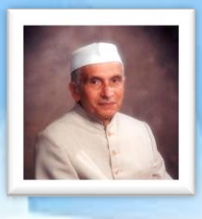

Founder: Pandit Nardevji Vedalankar
Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
April 25, 1948

Bharat: Dr M L Gupta Adaitya's message to Hindi Shiksha Sangh (S.A.) on Hindi Diwas September 14, 2018

(Dr Gupta in 2012, attended the 9th World Hindi Conference in Johannesburg and thereafter travelled by bus to Durban, 600kms away to visit the Hindi Shiksha Sangh Head Quarters)

दक्षिण अफ्रीका के सभी भाई बहनों को मेरी नमस्ते। 2012 में जब जोहान्सबर्ग में विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ था तब मैं पहली बार आप लोगों के बीच आया था। आप लोगों के हृदय में भारत, भारतवासियों और भारत के जन जन की भाषा और राजभाषा हिंदी के प्रति जो सम्मान मैने देखा उसे देख कर मुझे बहुत अच्छा लगा। तब से मेरे लिए जहां भारत मेरा अपना देश है, वहीं दक्षिण अफ्रिका हमारे अपनों का देश है। जो हॉन्ग स्वर्ग सी डरबन तक की सफर में ही न जाने कितने रिश्ते बन गए थे, मैं तो दोबारा यहां नहीं आ सका लेकिन रिश्ते आगे बढ़ते रहे। आप लोगों द्वारा दिए गए प्रेम को मैं कभी भुला नहीं सकता।

अक्सर लोग ऐसा मानते हैं कि भाषा केवल संवाद का माध्यम है। लेकिन मेरा यह मानना है कि संवाद का माध्यम होने के साथसाथ भाषा एक ऐसा माध्यम है जो हमें अपनी जड़ों सै जोड़ कर रखता है। इसके माध्यम - से हम अपनी संस्कृति, अपने संस्कारों और अपने धर्म से जुड़ते हैं।

यही कारण है कि आज भी दक्षिण अफ्रीका सहित दुनिया के तमाम भारतवंशी देशों में वहां के ज्यादातर लोग रामचरितमानस के माध्यम से हिंदी से जुड़े रहे, और हिंदी के माध्यम से अपनी संस्कृति और धर्म से जुड़े हुए हैं। अपनेपन का एहसास तभी होता है जब कोई व्यक्ति अपनी भाषा में बात करता है। मां बच्चों से हमेशा अपनी भाषा में बात करती है इसलिए उसकी भाषा मातृभाषा बन जाती है।

इसलिए हिंदी दिवस के अवसर पर मैं आप सब से केवल इतनी विनती करना चाहूंगा कि आप जो भी भाषा सीखें, अपने देश की आवश्यकताओं के अनुसार जिस भी भाषा का प्रयोग करें लेकिन अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए, अपनी संस्कृति व संस्कारों से जुड़े रहने के लिए बच्चों को हिंदी अवश्य पढ़ाएं।

दक्षिण अफ्रीका के हमारे भाई बहनों द्वारा जिस प्रकार हिंदी शिक्षा संघ के माध्यम से देश-भर में हिंदी की शिक्षा दी जाती है और हिंद वाणी के माध्यम से हिंदी सहित तमाम भारतीय भाषाओं के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए इनका प्रचार प्रसार किया - जा रहा है वह अत्यधिक सराहनीय है। मुझे लगता है कि आपके इस कार्य से भारत के लोगों को भी प्रेरणा मिल सकती है। इसके लिए मैं हिंदी शिक्षा संघ के सभी पदाधिकारियों, इससे जुड़े सभी व्यक्तियों के साथ साथ सभी भारतवंशी भाई बहनों को एक बार फिर सभी भारतवासियों की ओर से नमन करता हूं।

निदेशक: वैश्विक हिंदी सम्मेलन।
मुंबई, भारत।

Hindi Diwas 2018 was celebrated with Hindi Teachers' Workshop at the Pattundeen Kasieprasad Hindi Centre, Durban

On September 16, 2018, Srm Shereen Behadar, Chairperson of the Academic Committee of Hindi Shiksha Sangh organised the Teacher's Workshop which was attended by 60 teachers. It was well received. Teachers commented that they felt they could address their problem areas with their students. A wide range of topics were covered and emphasis was placed on the use of the prescribed texts as a basis for grammar rules. Teachers called for more workshops. Teachers also made their details available to start a WhatsApp group so that they could receive assistance whenever the need arose. A handout with grammar rules and the format of the year-end examination papers for the Junior Grades were presented in preparation for the examination on October 21, 2018. A quick evaluation, an encouraging workshop. All the best to the teachers for their revision programmes and more so to all the students writing the examinations.

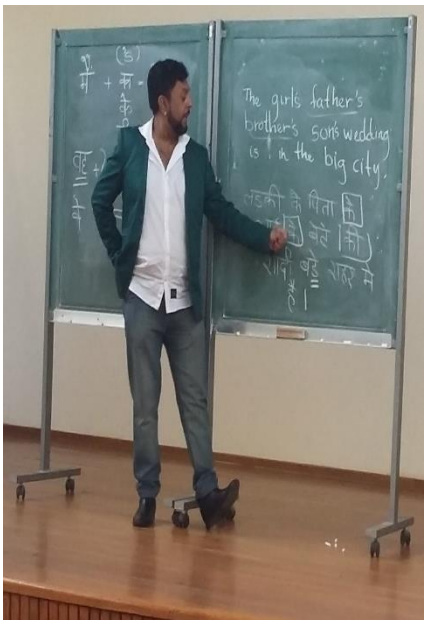

Proud Moment for the Hindi Fraternity
Hindi Activist, Dr M L Gupta Aditya, India Honoured by the Government of India with "The Pride of National Language Award"

उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू द्वारा डॉ एम .एल .गुप्ता 'आदित्य' को 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार'

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना, मुंबई के सहायक निदेशक डॉ एमगुप्ता .एल . 'आदित्य' को 14 सितंबर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू द्वारा 'राजभाषा गौरव' प्रथम स्थान हेतु पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार उन्हें विदेश मंत्रालय के अनतर्गत 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद' द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठित पत्रिका 'गगनांचल' में प्रकाशित लेख 'भाषा :प्रौद्योगिकी- सत्तर साल का सफरनामा' के लिए प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत के माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी द्वारा की गई। मंच पर गृह राज्यमंत्री श्री किरण रिजिजु तथा श्री हंसराज अहीर और राजभाषा विभाग के सचिव श्री शैलेंद्र भी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त समारोह में संसदीय राजभाषा समिति, केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्यों के अतिरिक्त अनेक सांसद, भारत सरकार की अनेक वरिष्ठ अधिकारी व विद्वान उपस्थित थे।

मुंबई विश्वविद्यालय के बोर्ड ऑफ स्टडीज़ के पूर्व (हिंदी) सदस्य डॉगुप्ता . इसके पूर्व केंद्रीय गृह मंत्रालय के अन्तर्गत राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय उप निदेशक के रूप में (कार्यान्वयन) गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमण, दीव व दादरा नगर हवेली क्षेत्र स्थित केंद्रीय कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की मॉनीटरिंग का कार्य करते रहे हैं।डॉ एमगुप्ता आदित्य .एल . 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' संस्था के निदेशक के रूप में भी देश - विदेश में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। डॉगुप्ता .एल.एम. आदित्य ने हाल ही में मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाषा प्रौद्योगिकी तथा मीडिया में भारतीय भाषाओं को ले कर अपने विचार प्रखरता से प्रस्तुत किए थे।

(This article will be published in a series form)

South Africa: Professor Rambhujan Sitaram writes on नेटाली हिन्दी "Natalie Hindi" in South Africa

विषय प्रवेश

सन् में उत्तर भारत से हिन्दी भाषा अपने ग्रामीण स्वरूप में नेटाल 1860, दक्षिण अफ़्रीका आयी। अवधी तथा भोजपुरी अधिकांश लोगों की बोली थी, अतः यहाँ पर विकसित हो रही सामान्य संपर्क भाषा का नाम नेटाली हिन्दी पड़ गया । वैसे भोजपुरी के लक्षणों के आधिक्य से यह भोजपुरी / साउथ अफ़्रीकन भोजपुरी भी कहलाने लगी । भारतीय भाषाओं के विकास तथा विभाजन के आधार पर अवधी, भोजपुरी तथा उत्तर प्रदेश एवं बिहार की सभी भाषाएँ जो नेटाल में बोली जा रही थीं, वे सभी हिन्दी की उपभाषाएँ अथवा बोलियाँ थीं । विमलेश कांति वर्मा ने अपने ग्रंथ "हिन्दी और उसकी उपभाषाएँ" में लिखा है कि "हिन्दी एक भाषा का ही नहीं वरन् एक भाषा समष्टि का नाम भी है ।" सभी उपभाषाओं में, जिनमें भोजपुरी के साथ अवधी तथा खड़ीबोली भी शामिल हैं, पर्याप्त लोक साहित्य प्राप्त है, तथा "क्षेत्र विशेष में वहाँ के निवासियों की भावाभिव्यक्ति का माध्यम है " (1995:3)।

नेटाल / दक्षिण अफ़्रीका में हिन्दी के ऐतिहासिक संदर्श पर दृष्टिपात करते हुए यहाँ विकसित और प्रयुक्त हिन्दी पर ध्यान दिया जाएगा । भारतेत्तर गिरमिटियों द्वारा बसाये गये देशों में हिन्दी का स्थान एक सा नहीं है । फ़ीजी, मोरीशस, गुयाना, सूरीनाम तथा ट्रीनीडाड में भारतीयों की संख्या अन्य जातियों की तुलना में लगभग समान है, अतः हिन्दी को प्रशासन द्वारा भी सुविधाएँ प्रदान की जाती है । दक्षिण अफ़्रीका एक बड़ा राष्ट्र है जिसमें विभिन्न जातियाँ तथा प्रतिशत है । और इस में भी 3 आधिकारिक भाषाएँ भी हैं तथा जहाँ भारतीयों की संख्या केवल 11 प्रतिशत से कम है । ऐसी परिस्थितियों में हिन्दी का प्रयोग स 50 हिन्दी भाषियों की संख्या ीमित क्षेत्रों में (restricted domain) होता है । तथापि हिन्दी भाषियों के मन में हिन्दी के प्रति लगाव कम नहीं हुआ है । अतः प्रयोग क्षेत्र के साथ हिन्दी भाषा में रचनात्मक तथा वैज्ञानिक कृतियों का सर्वेक्षण होगा, जिसमें शिक्षण संबंधी रचनाओं, हिन्दी विद्वानों द्वारा अनुसन्धान कार्य तथा हिन्दी मनीषियों के ग्रंथों की समीक्षा होगी । इस के साथ नेटाल / दक्षिण अफ़्रीका में अन्य भाषाओं के संपर्क में हिन्दी भाषा में परिवर्तन, शब्दभंडार में अभिवृद्धि और - हिन्दी के विकास के लिए किये जा रहे प्रयासों पर दृष्टिपात किया जाएगा ।

भारत में माना जाता है कि पानी और वानी कुछ ही दूरी पर बदलते हैं । तिसपर नेटाल में विभिन्न प्रान्तों तथा जिलों के प्रवासी भारतीय एक साथ रहने लगे । अल्प काल में ही एक सरल जनसंपर्क भाषा (Lingua Franca) का उभरना कोई आश्चर्य की बात नहीं । अतः हिन्दी क्षेत्र के आतिरिक्त, दक्षिण भारत के तमिल, तेलुगु और दक्षिणी

उर्दू भाषी भारतीय भी हिन्दी में वार्तालाप करने लगे। गाँधी जी ने भी इसी मिश्रित सरल भाषा को "टूटीफूटी -" हिन्दी नाम दिया तथा समर्थन किया। लगभग वर्ष पूर्व अमीर खुसरो ने जो उदगार किया था 750– "मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, यदि तुम कुछ पूछना चाहते हो तो हिन्दी में पूछो, मैं तुम्हें उसमें बता सकूँगा", नेटाल में चरितार्थ होने लगा। हिन्दी साहित्य का विधिवत अध्ययन, और ऐतिहासिक संदर्श का विश्लेशण बीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही शुरू हुआ। इस विषय पर यत्किंचित् ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि दक्षिण अफ़्रीका में जो हिन्दी पहुँची, तथा जो आज सीखीसिखायी जा रही है-, वह उसी उदगम स्त्रोत से जुड़ी है। इस बात पर भी प्रकाश पड़ेगा कि भाषा वैज्ञानिक राजेन्द मिस्त्री ने नेटाल / दक्षिण अफ़्रीका में बोली जानेवाली भाषा को साउथ अफ़्रीकन भोजपुरी नाम दिया, तथा उससे "हिन्दी" नाम को पृथक रखने का संकल्प प्रकट किया राजेन्द मिस्त्री)1991: Prologue(

हिन्दी भाषा / साहित्य के पुरोधा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल सन्से 1843 1957) माना है: (1 राजनीतिकसमाजिक--ऐतिहासिक कारणों से त्रिभुवन सिंह ने 2010): (16 काल विभाजन को निम्न प्रकार से कियारीति - / श्रृंगार काल के पश्चात सन् से 1947 तक जागरण काल तथा 1947 से 1875 वर्तमान तक आधुनिक काल। शुक्ल जी के आधुनिक तथा त्रिभुवन सिंह के जागरण काल का उल्लेख इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 1843 से प्रारम्भ होनेवाली कालावधि प्रवासी भारतीयों के लिए अर्थपूर्ण थी। यह सर्वविदित है कि भारत से श्रमिक के रूप में भारतीयों का प्रव्रजन सन् से प्रारम्भ हुआ और आधिकारिक 1834 तक चला। ये 1917 तौर पर प्रवासी भारतीय अपने देश तथा परिजनों से अलग होकर हज़ारों मील दूर अत्यंत कष्टपूर्ण परिस्थितियों में श्रम तथा जीवन यापन किया। नेटाल – दक्षिण अफ़्रीका में सन् से आये भारतीयों 1860 की दशा अन्य शर्तबन्द मज़दूरों अथवा गिरमिटियों की तरह थी। इन डायस्पोरा देशों मंे अभी भी उन्नीसवीं शताब्दी का भारत देखने को मिल जाएगा। उनकी भाषा, विचार पद्धति, रस्मरिवाज़ सब परंपरा से प्राप्त विरासत - के अनुरूप है। भाषा और उसका साहित्य/ लोकसाहित्य सदियों से जो मूल्य तथा जीवन दृष्टि लेकर चल रहा था, उसका प्रभाव इन प्रवासी भारतीयों पर भी पड़ा। आदिकाल/ वीरगाथाकाल की रचना आल्हाखण्ड हिन्दी गिरमिटियों में लोकप्रिय था। आल्हा की पंक्तियाँ 2010 त्रिभुवन सिंह):(35

बारह बरिस लें कूकुर जीयै औ तेरह लें जियै सियार
बरिस अठारह क्षत्रिय जीयै आगे जीवन के धिक्कार

भारतीयों को, विशेषतः क्षत्रियों को, युद्ध में आत्मबलिदान के लिए उद्बुद्ध करती है। यह उस समय 12)वीं सदी (की मांग थी। इसी तरह भक्तिकाल का कृष्ण भक्ति तथा रामभक्ति काव्य और कबीर की वाणी आध्यात्मिक सत्य की ओर प्रेरित करती थी। श्रृंगारकाल में भी जीवन में रस के साथसंयम की शिक्षा प्राप्त होती थी।

(to be continued)